FREE LIBRARIES NETWORK
India & South Asia

फ्री लाइब्रेरीज ज़िंदाबाद

नेटवर्क समाचार का त्रैमासिक दौर **अंक 5 | जनवरी - मार्च 2023**

पुस्तकालय और पाठशाला

अधिकतर सरकारी स्कूलों में एक हफ्ते में कुछ 30-40 घंटों की पढ़ाई होती है, जिनमें 4-5 घंटें आम तौर पर पाठ्यक्रम के अतिरिक्त माने जाने वाले गतिविधियों के लिए होते हैं। इनमें पुस्तकालय का एक घंटे का सत्र भी है। पुस्तकालयों को 'पठ्येतर गतिविधि' का दर्जा देना पुस्तकालय के प्रति सीमित समझ दिखलाता है। यह तो हम जानते ही हैं कि शैक्षिक उत्कृष्टता और साक्षरता के लिए पुस्तकालयों का होना अनिवार्य है, तो फिर स्कूली पठ्यक्रम में पुस्तकालयों के लिए केवल एक घंटे का समय ही क्यों? पुस्तकालयों का यह विडम्बना भरा व्यंगपूर्ण चित्र केवल पुस्तकालयों के बारे में सीमित समझ के कारण नहीं है। कौन पुस्तकालय जा सकता है, कितनी देर के लिए और कौनसी किताबें पढ़ने, इन सब पर नियंत्रण रखना उन्हीं सामाजिक असमानताओं को बनाए रखने का ज़रिया है जिनसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी केवल कुछ ही लोगों और गुटों को लाभ मिला है। जिन बच्चों को सामाजिक और आर्थिक पूंजी का लाभ है, उनके लिए किताबें, डिजिटल साक्षरता और अन्य संसाधन सुलभ हैं, लेकिन जो छात्र पहले से ही शेक्षिक सुविधाओं से वंचित हैं, उनके लिए किताबों तक पहुँच और भी कठिन हो जाती है।

स्कूलों में पुस्तकालय ज़रूरी हैं क्योंकि प्रत्येक बच्चे को पढ़ने का हक है। असर (ASER) रिपोर्ट 2023 के अनुसार सर्वेक्षण किए गए पाँचवीं कक्षा के केवल 43% छात्र ही दूसरी कक्षा का पाठ पढ़ सकते हैं। ऐसा दिल्ली में 200 छात्रों के साथ किए गए हमारे अपने मूल्यांकन में भी दिखता है, जिसमें दूसरी से आठवीं कक्षा में पढ़ रहे लगभग 50% छात्र एक मिनट में 50 शब्दों से कम ही पढ़ पाते हैं। ज़ाहिर है कि स्कूलों में पुस्तकालयों के होने पर कोई भी सवाल करना अनुचित है।

अगर हम चाहते हैं कि सभी बच्चों को अपने पढ़ने का हक मिले, शिक्षा की आज़ादी हो, तो उन्हें ऐसा पुस्तकालय मिलना चहिए जो सप्ताह में केवल एक बारी ही न खुला हो, जहाँ किताबें बंद अलमारी के अंदर हो और जहाँ उन्हें चुनने की आज़ादी हो। अनिवार्य है कि पुस्तकालय पाठ्यक्रम का हिस्सा हो, और ऐसी जगह हो जहाँ बच्चे बिना भय के किताबों को गहराई से पढ़ सकें, नए विचारों को खोज सकें, अपनी जिज्ञासा को बढ़ावा दे सकें और जहाँ सीखना एक आनंदमय अनुभव बने। गिरती साक्षरता दर से जूझने के लिए और बच्चों का किताबों से सार्थक संबंध बनाने के लिए, पुस्तकालय बेहतरीन स्थान है क्योंकि यहाँ छात्र अपनी पसंद से विविध किताबों और साहित्य के साथ जुड़ते हैं, खास तौर पर तब जब पुस्तकालय और उसकी विभिन्न सुविधाएँ बच्चों के लिए समस्त रूप से उपलब्ध हो, सप्ताह में एक-दो बार नहीं, बल्की हर एक दिन। इस अंक में एफ. एल. एन (FLN) के उन सदस्यों के बारे में पढ़ें जो स्कूलों में पुस्तकालयों को बदलने का प्रयास कर रहे हैं। वे उनके काम में आ रही चुनौतियों को हम सबके साथ साझा करेंगे, और हमें गर्व है कि उनके इन अनुभवों से हम भी सीख सकेंगे।

प्राची ग्रोवर
कोर टीम सदस्य और लाइब्रेरी करिक्युलम सदस्य, फ्री लाइब्रेरीस नेटवर्क
निर्देशक, द कम्यूनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट

हम हैं एफ.एल.एन !

एफ.एल.एन सदस्य नि:शुल्क या फ्री/मुफ़्त पुस्तकालयों के निर्माण, संचालन और प्रचार के लिए काम करते हैं जो जाति, वर्ग, धर्म, लिंग और यौन पहचान या विकलांगता के भेद-भाव के बिना सभी का स्वागत करते हैं। हम सभी को पुस्तकों को मुफ़्त पहुँचाने और उन नए पाठकों को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, जिनके पास शायद स्वयं किताबें पढ़ पाने के साधन अभी नहीं है।

वेबसाइट- https://www.fln.org.in/| **ट्विटर** @FreeLibNetwork |
इंस्टा: freelibrariesnetworkfln | **फेसबुक** @freelibrariesnetworkFLN
ईमेल: freelibrariesnetworkfln@gmail.com और पुस्तक वितरण के लिए: booksforallFLN@gmail.com

एफ. एल. एन कार्यक्रम और कार्यशालाएं

इंडियन लाइब्रेरी कांग्रेस, कन्नूर| १ से ३ जनवरी २३

एफ. एल. एन ने कन्नूर विश्वविद्यालय में आयोजित पीपल्स मिशन फॉर सोशल डेवलपमेंट और केरल स्टेट लाइब्रेरी काउंसिल द्वारा आयोजित इंडियन लाइब्रेरी कांग्रेस में भाग लिया। इस कांग्रेस में केरल के सभी जिलों से 3000 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। मुख्य रूप से जो प्रतिभागी थे - वे लाइब्रेरियन, पुस्तकालय कार्यकर्ता, और पुस्तकालय विज्ञान के छात्र और प्रोफेसर थे। पूर्व सांसद और विधायक, सिविल सेवा अधिकारी सिविल सेवा अधिकारी तथा शिक्षा और पुस्तकालय कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। अधिकांश प्रतिभागी केरल से थे, कुछ अन्य राज्यों जैसे कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, आदि के प्रतिभागी भी थे । कांग्रेस का उद्घाटन केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने एक बड़े सार्वजनिक मैदान में किया था, जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए थे।विश्वविद्यालय में अकादमी के सदस्य और पुस्तकालयाध्यक्षों ने पुस्तकालयों का विकास और इतिहास, सार्वजनिक पुस्तकालय की राजनीति, पुस्तकालय और महिलाएं, बच्चे, उपेक्षित समूह, पुस्तकालयों में प्रौद्योगिकी की भूमिका जैसे विषयों पर पत्र प्रस्तुत किए। यह बहुत ही हार्दिक अवसर था जब हमने पुस्तकालय के परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास करने वाले लोग, जैसे की - पुस्तकालय कार्यकर्ता, राजनेता, सिविल सेवा के सदस्य की एक बड़े समूह को शामिल होते हुए देखा। यह स्पष्ट था कि लगभग सभी ने पढ़ने की उपलब्धता और सार्वजनिक पुस्तकालयों तक पहुँच को एक बुनियादी मानव अधिकार के रूप में देखा। केरल के इतिहास से एक " मुहिम के निर्माण" के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला और एफ. एल. एन को कुछ नए सहयोगी भी मिले।

टी.सी.एल. पी से प्राची ने हरियाणा, महाराष्ट्र और तमिलनाडु पर ध्यान केंद्रित करते हुए राज्यों के पुस्तकालय विधानों की तुलना करते हुए अपना अनुसधान पत्र प्रस्तुत किया। उनके पेपर में कानून की कमियों को दर्शाया गया था और इस बात पर प्रकाश डाला गया था कि सूचना तक पहुंच में बढ़ते विभाजन के लिए कानून कैसे अपरवर्ती और अनुत्तरदायी बने हुए हैं।

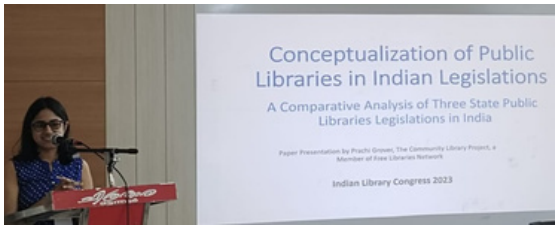

फ. एल. एन कोर समूह की सदस्य मधुमिता ने पुस्तकालयों पर राष्ट्रीय मिशन, सार्वजनिक पुस्तकालयों को समझने और विकसित करने की महत्वाकांक्षा के साथ 2014 में शुरू किए गए 400 करोड़ के बजट वाले मिशन पर अपना पेपर प्रस्तुत किया। पेपर ने मिशन के वर्तमान (असंतोषजनक) परिणामों और सूचना और पारदर्शिता की कमी को प्रस्तुत किया। एफ. एल. एन को इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि फ्री पुस्तकालयों के लिए नीतियां और मिशन विचलित क्यों हो जाते हैं और साथ ही साथ वह ऐसे संस्थानों (जैसे NVLI (National Virtual Library) का निर्माण क्यों करते है, जो मुफ्त सुलभ सार्वजनिक पुस्तकालयों के मूल जनादेश को व्यर्थ करता है। लाइब्रेरी कांग्रेस, केरल में आयोजित अपनी तरह का पहला एक ऐसा आयोजन/इवेंट था। जिलों और गांवों में होर्डिंग्स और बैनरों के साथ, जनता के बीच इसका व्यापक प्रचार किया गया था। लाइब्रेरी कांग्रेस के शैक्षणिक सत्रों में भाग लेने के लिए एक पंजीकरण शुल्क था, परन्तु उसके अन्य भाग निःशुल्क थे। कोई भी सदस्य अंदर आ सकते थे और मुख्यमंत्री और अन्य पदों पर आसीन व्यक्तियों को पुस्तकालयों के मूल्य और आवश्यकता पर, पढ़ने के अधिकार पर, और शिक्षा के अधिकार पर बात करते हुए सुन सकते थे।

प्रस्तुत किए गए पेपर्स /कागजात के लिंक : Comparative Review on Library Legislation in India, & Public Library Infrastructure in India and National Mission on Libraries.

See: NML Survey In India's Public Libraries

लाइब्रेरी लैब और बैठक | भीम राजस्थान - 30 जनवरी से 1 फरवरी 2023

3 दिवसीय आवासीय कार्यशाला में, 11 एफ. एल. एन पुस्तकालयों के 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया | प्रतिभागियों ने सामूहिक रूप से और गहराई से पुस्तकालय के काम, इसकी क्षमता और एक अधिक समावेशी और सूचित समाज बनाने में इसकी भूमिका के बारे में सोचा। कार्यशाला का संचालन, प्राची ग्रोवर (द कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट), रितुपर्णा (अकम फाउंडेशन) और पूर्णिमा (एफ. एल. एन) ने स्कूल फॉर डेमोक्रेसी के सहयोग से किया। पहले सत्र की शुरुआत पुस्तकालयों के इतिहास और विकास के साथ हुई और 'निःशुल्क या फ्री पुस्तकालयों आंदोलन' बनाने की हमारी सामूहिक जिम्मेदारी पर भी बात हुई। प्रतिभागियों ने मजदूर किसान शक्ति संगठन के शंकर सिंह से सूचना के अधिकार आंदोलन(RTI मूवमेंट) के इतिहास (उद्देश्य, दर्शन और जमीनी स्तर से बदलाव लाने की रणनीति) के बारे में भी सुना। दूसरे और तीसरे दिन पुस्तकालय प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया और कैसे वे मौजूदा असमानताओं को संबोधित करते हैं जो पढ़ने की पहुंच को रोकते हैं। प्रत्येक प्रतिबिंब अभ्यास को सर्वोत्तम प्रथाओं (बेस्ट प्रक्टिसेस)और मजेदार खेलों जैसे जोर से पढ़ना(रीड अलाउड), कहानी सुनाना, पुस्तक खजाने की खोज, मेक-योर-ओन पॉप-अप-लाइब्रेरी और साइलेंट रीडिंग आदि के साथ रेखांकित किया गया था। प्रशिक्षण में पढाई के पाठ्यक्रम पर उतना ही जोर दिया गया जितना कि पुस्तकालयों पर जो कि सभी को बुनियादी मानव और संवैधानिक अधिकार देने के लिए एक स्थान है। सभी प्रतिभागी एक ऐसे पुस्तकालय के निर्माण के लिए प्रेरित और प्रतिबद्ध हो कर गए जो कि जो सभी के लिए ज्ञान और सूचना तक पहुंच में समानता की गारंटी देता है। स्कूल फॉर डेमोक्रेसी और एमकेएसएस के बारे में अधिक जानने के लिए: https://schoolforddemocracy.org/about-sfd/

पुस्तक अवधि कार्यशाला और टी.एन. मीटअप चेन्नई | 12 Feb 23

इस एक दिन की कार्यशाला में 6 पुस्तकालयों की मुलाकात एक आई.टी. अकादमी में हुई। (धन्यवाद एफ. एल. एन सदस्य- राम्या- चॉकपीस!) इस कार्यशाला का आयोजन एक दूसरे से सीखने और बच्चों के साहित्य में व्यापक विविधता को समझने के लिए किया गया था। प्रतिभागियों ने पुस्तकालयों को सभी के लिए उपलब्ध कराने और उनकी सर्वोत्तम प्रथाओं के लिए अपने काम और मिशन को साझा किया। । लीड फेसिलिटेटर बानू (रीडिंग स्पेस, कुड्डालोर) ने हमें क्यूरेशन (curation) कौशल पर एक आकर्षक सत्र लिया। उन्होंने हमसे आग्रह किया कि हम क्या पढ़ते हैं और क्यों , उस पर चिंतन करें। उन्होंने हमें उन पुस्तकों की एक श्रृंखला से परिचित कराया, जिन्हें लाइब्रेरियन अपने समुदायों के लिए खोज सकते हैं। जिनमें शब्दहीन पुस्तकें, संख्या पुस्तकें, वर्णमाला पुस्तकें, द्विभाषी पुस्तकें, अनुवादित कार्य, वास्तविक घटनाओं और लोगों पर आधारित पुस्तकें, विकलांगता, कामुकता, लिंग अभिव्यक्ति और अधिक और पुस्तके भी शामिल थी। प्रतिभागी अन्य थीम के तहत भी संग्रह ब्राउज़ कर सकते थे । चेतना ट्रस्ट की नमिता और कामाक्षी ने हमें अपने पुस्तकालयों को प्रिंट, मोटर और सीखने की अक्षमता वाले लोगों के लिए अधिक समावेशी बनाने पर एक रहस्योद्घाटन वाला सत्र दिय। उन्होंने बताया की कैसे हम खुद को लाइब्रेरियन के रूप में संवेदनशील बनाकर और कम लागत वाले उच्च प्रभाव वाले पुस्तकालय संसाधनों को क्यूरेट करके अपनी लाइब्रेरी में सब ही का स्वागत दिल खोलकर कर सकते है। पहली पीढ़ी के विकलांग पाठकों द्वारा उपयोग की जा सकने वाली पुस्तकों के निर्माण के अलावा, चेतना ट्रस्ट उन पुस्तकों के निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करता है जो विकलांग बच्चों के जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं। सरल लागत प्रभावी और कल्पनाशील संसाधनों का एक संग्रह देखने के लिए उनकी वेबसाइट पर नज़र डालें जो

केवल ब्रेल लिपि के साथ किताबें प्रदान करने से परे हैं। पुस्तकालय के मौजूदा संग्रह में इनमें से कुछ सहायक चीज़े (जैसे आवर्धक शीट, बुक स्टैंड) को कैसे शामिल किया जाए, इस पर उनके पास चरण-दर-चरण निर्देश हैं। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हम पर हमारे समुदाय के भीतर पहुंचने और विकलांग पाठकों का हमारे स्थान पर स्वागत करने की जिम्मेदारी ह। ऐसा करना, एक ऐसी मानसिकता को चुनौती देता है जो यह मानती है कि पुस्तकालय केवल दृष्टि वाले या कुछ भौतिक लोगों के लिए हैं।

बानू इंस्टाग्राम : @ReadingSpace_freelibrary चेतना ट्रस्ट वेबसाइट : https://www.chetana.org.in/

एफ. एल. एन का लक्ष्य ऐसी कई और व्यक्तिगत कार्यशालाओं का आयोजन करना है। अगर आप अपने क्षेत्र में वर्कशॉप/मीट अप करने में सहायता चाहते हैं तो एफ. एल. एन ऑल-मेंबर व्हाट्सएप ग्रुप देखें या उससे भी बेहतर होगा **freelibrariesnetworkfln@gmail.com** पर लिखें।

अन्य एफ. एल. एनसमाचार

साहित्य उत्सव: FLN साहित्य उत्सवों में- पुस्तकालय आंदोलनों में महत्वपूर्ण हितधारकों- पाठकों और प्रकाशकों से जुड़ता आ रहा हैं। एफ. एल. एन लाइब्रेरी- Project Kitape Katha Koi, NEET, Snehjori, Pothor Puthibhoral Bhogbari, The Blue Ladder Trust, असम पुस्तक मेला में एक साथ आए। रितुपर्णा ने "फ्री पुस्तकालय आंदोलन का निर्माण: प्रकाशकों, लेखकों और मुफ्त पुस्तकालयों के बीच संबंध" पर पैनल चर्चा का नेतृत्व किया। उन्होंने सभी के लिए एक सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली बनाने की आवश्यकता और सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के आह्वान को बढ़ाने में नागरिक समाज, विशेष रूप से लेखकों और प्रकाशकों की भूमिका को रेखांकित किया। मृदुला (एफ. एल. एन और टीसीएलपी का प्रतिनिधित्व करती हैं) ने जयपुर साहित्य उत्सव में "बिल्डिंग रीडिंग कम्युनिटीज" पैनल में बात की। उन्होंने प्रकाशकों का ध्यान पाठकों की बढ़ती संख्या की ओर आकर्षित किया जिन्हें अक्सर पाठक/बाजार के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता है। उन्होंने इस बारे में बात की कि कैसे एक समाज के रूप में हमने कुछ समुदायों को पढ़ने से बाहर कर दिया है और हमें इसे अब ठीक करने की आवश्यकता है और यह पहचानना चाहिए कि पढ़ना, सभी का अधिकार होना चाहिए और हमारी सामग्री, हमारी लाइब्रेरी हमारे सार्वजनिक स्थलों को सभी को सेवा प्रदान करने की जरूरत है।

FLN इस बारे में बात करने के लिए और अधिक आयोजनों, स्थानों की तलाश कर रहा है कि क्यों एक समाज के रूप में हम सभी को मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालयों की मांग करनी चाहिए। चाहे हम प्रकाशक हों, लेखक हों, चित्रकार हों, पाठक हों या एक आम नागरिक- हम सबका निशुल्क और सार्वजनिक पुस्तकालयों से सरोकार है और इस आंदोलन में हमारी हिस्सेदारी है। अन्य स्थानों पर ऐसी चर्चाओं के आयोजन या अन्य विचारों के बारे में हमें freelibrariesnetworkfln@gmail.com पर लिखे।

रीडिंग करिकुलम पर बातचीत: FLN सदस्यों ने लाइब्रेरी करिकुलम और रीडिंग करिकुलम पर दिलचस्प बातचीत की। Turning Pages- जो की एक स्कूल पुस्तकालय कार्यक्रम हैं, उनके तरफ से शिक्षण में पुस्तकालयों के स्थान पर एक प्रश्न उठाया गया - क्या पुस्तकालय एक भाषा शिक्षण का माध्यम हैं या सिर्फ पढ़ने का कौशल विकसित करने का माध्यम? कई पुस्तकालयों में ऐसा देखा गया है कि जहाँ बच्चे बहुत दिलचस्पी से भाग ले रहे हैं, वहीं कई लोग पढ़ने के सफर में पीछे रह जाते हैं, क्योंकि वे स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ने में सक्षम नहीं होते हैं और पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली पुस्तकों तक पहुँच से वंचित रह जाते हैं। विभिन्न पुस्तकालयों ने अपना दृष्टिकोण साझा किया।

प्राची (TCLP) ने स्पष्ट किया कि पुस्तकालय केवल किताबों की दुनिया का परिचय नहीं है, बल्कि विचारों की दुनिया का परिचय है। माइकल (TCLP) ने साझा किया कि पढ़ने के लिए शिक्षण हमारे स्कूलों में दिया जाता है, लेकिन स्कूल कभी-कभी उन्हें स्वतंत्र या कुशल पाठक बनाने में विफल होते हैं और इसलिए बच्चे पढ़ने में आनंद की सराहना नहीं करते हैं। उनका मानना है कि पुस्तकालय की भूमिका अभ्यास और अभिव्यक्ति के लिए स्थान और जगह प्रदान करना है। वो बच्चे जो लगातार किताबों

तथा रीड अलाउड के संस्पर्श में हैं वे काफी सहजता से एक स्वतंत्र पाठक होने के सफर में आगे बढ़ते हैं। चेतना ट्रस्ट की कामाक्षी ने कुछ उपकरण साझा किए जिनका वे उपयोग करते हैं- रुकना और एक सफेद बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना और बस यह सोचना कि उस ध्वनि का क्या अर्थ हो सकता है- यह किस के समान है, बच्चों ने इसे पहले कहाँ सुना, कहाँ देखा आदि। निवेदिता बेद्दादुर ने बच्चों को पढ़ने में मदद करने के लिए तुकबंदी, ताल और प्रवाह की भूमिका साझा की और संगीत, गीत और डिटिज को शामिल करने का सुझाव दिया। जबकि लगातार एक्सपोजर महत्वपूर्ण है, कभी-कभी अधिक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है- बच्चों को अक्षरों की पहचान कराना और शब्दों का अर्थ बनाना सिखाना। TCLP हिंदी और अंग्रेजी में एक गहन पठन कार्यक्रम चलाता है और विवरण उनकी वेबसाइट पर उपलब्ध है।

इसके बाद, स्कूलों के साथ भागीदारी पर चर्चा हुई। कई स्कूलों में पुस्तकालयों के कार्यक्रमों में सीमित जुड़ाव होता है, आमतौर पर सप्ताह में एक बार)। यह आवश्यक एक्सपोजर प्रदान नहीं कर सकता है। ऐसे मामलों में, अन्य समाधान मदद कर सकते हैं - अधिक बार पुस्तकालय period की मांग करना, read aloud पर शिक्षकों को प्रशिक्षण देना, पुस्तकालयों में शिक्षकों के लिए इंटर्नशिप, बच्चों की पहुंच वाली पुस्तकों की संख्या बढ़ाने के लिए स्थानीय या सामुदायिक पुस्तकालय के साथ स्कूल पुस्तकालय को जोड़ना। इस चर्चा में खासतौर पर उनलोगों लिए बहुत कुछ था जो अपने पुस्तकालयों में बच्चों के साथ काम कर रहे हैं और जो स्कूल पुस्तकालय कार्यक्रमों में काम कर रहे हैं।

सिर्फ एक सवाल

हमारे अपने लिए और पुस्तकालय चलाने के बारे में सोचने के लिए ।

निःशुल्क पुस्तकालयों से हमारा क्या अभिप्राय है? निशुल्क किताबों तक पंहुच, निशुल्क सदस्यता - और क्या निशुल्क हो सकता है? परन्तु अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और भेदभाव से आज़ादी के बारे में क्या हो रहा? ऐसे निशुल्क पुस्तकालय बनाने की लागत कौन वहन करता है? यह लागत असल में किसे वहन करनी चाहिए?

सदस्य पुस्तकालयों पर स्पॉटलाइट

निःशुल्क पुस्तकालय नेटवर्क के कुछ सदस्यों का परिचय। कृपया यह कॉलम देखें, हमारे FLN पुस्तकालयों के बारे में अधिक जानने के लिए । इस अंक में हाइलाइट किए गए FLN सदस्य हैं जो सरकारी या कम बजट वाले स्कूलों के साथ सक्रिय रूप से काम करते हैं।

शहनाज से बातचीत | रीडिंगस्टार्स इंडिया, शहनाज की जिज्ञासा के साथ शुरू हुआ कि क्या, कैसे और क्यों हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे बच्चों को विफल कर रही है। उसने प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के साथ बातचीत की और पड़ोस के एक स्कूल में वालंटियर किया। इसके साथ ही उसने खुद कोशिक्षित करना शुरू कर दिया- पढ़ाने की फिलोसोफी, पढ़ने और समझने के उपकरण पहली पीढ़ी के पाठकों को सिखाने के लिए। उन्होंने महसूस किया कि लाइब्रेरी शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं को हल करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वह पुस्तकालयों को एक ऐसे स्थान के रूप में देखती हैं जो बच्चों को सशक्त बना सकता है, जो महत्वपूर्ण सोच और आत्म अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। पुस्तकालय जैसी जगहों के आने से बेहतर साक्षरता और समझ कौशल स्वाभाविक हैं।

द क्लासरूम लाइब्रेरी: आरएसआई वर्तमान में क्लासरूम लाइब्रेरी प्रोग्राम (सीएलपी) को लागू करने और उसकी निगरानी करने के लिए 4 स्कूलों के साथ साझेदारी करता है। स्कूल अपने पाठ्यक्रम के भीतर, सप्ताह में कुछ घंटे निर्धारित करते हैं और यह कार्यक्रम के फलने-फूलने के लिए आवश्यक है। सीएलपी वर्तमान पढ़ने की क्षमता के आकलन के साथ

शुरू होता है, इसके बाद एक पुस्तक संग्रह तैयार किया जाता है जो उस ग्रेड की जरूरतों को पूरा करता है। फिर वे किताबों को सुलभ बनाने और पुस्तक जारी करने और प्रसार को प्रोत्साहित करने के लिए कक्षा के भीतर एक भौतिक स्थान और प्रक्रिया बनाते हैं। इसके बाद वे इस पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं, जोर से पढ़ने (रीड अलॉउडस), पुस्तकों के साथ जुड़ाव को गहरा करने के लिए और गतिविधियों आदि पर जोर देते हैं। इन विधियों का मूल उद्देश्य है कक्षा पुस्तकालय को स्वागत योग्य और सशक्त बनाना और स्वायत्तता और अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के तरीके खोजना ।

आरएसआई यात्रा: आरएसआई, 2018 में जयनगर, बैंगलोर में एक सामुदायिक पुस्तकालय और कक्षा पुस्तकालय कार्यक्रम के साथ शुरू हुआ। सीएलपी के साथ, शहनाज़ की सबसे बड़ी चुनौती वह है जिसे वह "पवित्र पाठ्यक्रम" कहती हैं। स्कूल प्रमुख और शिक्षक अपना समय, ध्यान और संसाधन पाठ्यक्रम को पूरा करने पर केंद्रित करते हैं और वास्तविक सीखने की कीमत पर औपचारिकताओं को पूरा करते हैं। यह दबाव अक्सर शिक्षा विभाग और बोर्ड ऑडिट जैसी बाहरी एजेंसियों से आता है। महामारी के दौरान आरएसआई ने सामुदायिक पुस्तकालय को बंद कर दिया और घर पर पढ़ने के लिए किताबों के बंडल तैयार किए। उन्होंने **"ComeReadWithMe"** लॉन्च किया और इसके तहत छोटे आकार के गुणवत्ता वाले जोर से पढ़ने **(**रीड अलॉउडस**)** के वीडियो प्रसारित किये। फिलहाल शहनाज कम्युनिटी लाइब्रेरी को फिर से खोलने पर काम कर रही हैं। महामारी के खोए हुए वर्षों की भरपाई के लिए **"**कैच अप**"** के दबाव के बावजूद बंगलौर और हैदराबाद में कक्षा पुस्तकालय कार्यक्रम फल-फूल रहे हैं। शहनाज़ इसका श्रेय शिक्षकों और प्रधानाचार्यों द्वारा उनके पिछले काम के लिए की गई सराहना को देतीं हैं क्यूंकि उन लोगों ने तब देखा की प्रत्यक्ष रूप से पुस्तकालय कार्यक्रम बच्चों को सीखने में ख़ुशी देता है और बच्चों को अन्य क्षेत्रों और विषयों में फलने फूलने में मदद करता है और इस तरह उनका **"**कैच अप**"** आसान बनाता है।

नेटवर्क शक्ति: इस यात्रा ने शहनाज को यह सवाल करने के लिए प्रेरित किया कि हमारी सरकारें सार्वजनिक पुस्तकालय के बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता क्यों नहीं देती हैं, स्कूल और शिक्षा नीतियां, पुस्तकालयों को पाठ्यक्रम में गंभीरता से एकीकृत क्यों नहीं करती हैं। वह मानती हैं कि **FLN** के रूप में, सार्वजनिक क्षेत्र में पुस्तकालयों की वकालत करने और इन सवालों को उठाने में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है।**FLN** लाइब्रेरियंस के लिए संसाधन बना भी सकता है और समेकित भी कर सकता है जैसे कि विषय आधारित पठन मॉड्यूल, लोकप्रिय बच्चों की किताबों पर आधारित अभ्यास और गतिविधियाँ, कक्षा पुस्तकालयों के लिए मानक बनाना आदि।

वर्तमान में सीएलपी कार्यक्रमों के माध्यम से आरएसआई 2800 से अधिक बच्चों के साथ काम करता है। सामुदायिक पुस्तकालय, जो वर्तमान में बंद है, समुदाय में 50-60 बच्चों को सेवा प्रदान कर रहा था।

रीडिंग स्टार्स इंडिया| फेसबुक @Reading Stars India **इंस्टाग्राम**: @readingstarsindia **ईमेल**: : readingstarsindia@gmail.com
Phone: +91 99456 79991 See RSI's Library Readiness Program uploaded on FLN Resources page. Click here

प्रेरणा से बातचीत | द ब्लू लैडर ट्रस्ट गुवाहाटी में एक गैर-लाभकारी पहल है जिसकी परिकल्पना 2020 में प्रेरणा ने एक दृष्टि के साथ की थी की अच्छी गुणवत्ता वाली किताबों और पुस्तकालय हस्तक्षेपों के माध्यम से बच्चों के लिए सक्रिय सोच स्थान बने जो सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा का समर्थन करता है और पढ़ने का आनंद देता है। इन्होंने पुस्तकालय कार्यक्रम चलाने के लिए बच्चों के लिए बाल चिकित्सा कैंसर उपचार वार्ड और बचाव घरों जैसे सरकारी और कम बजट वाले स्कूलों और सामुदायिक स्थानों के साथ भागीदारी की है।

द क्लासरूम लाइब्रेरी: पुस्तकालय कार्यक्रम (प्रोजेक्ट अनुभूति) प्रत्येक स्कूल या सामुदायिक स्थान में एक साप्ताहिक हस्तक्षेप है। बच्चों से जुड़ाव की शुरुआत उनके ग्रेड के पढ़ने के स्तर और रुचियों को मापने के लिए, जोर से पढ़ने (रीड अलॉउडस) से होती है। प्रेरणा तब प्रत्येक कक्षा के लिए विशिष्ट पुस्तक बंडल बनाती है और फिर स्कूल या कक्षा के भीतर एक भौतिक पुस्तकालय का स्थान बनाती है। कक्षाएं सामुदायिक निर्माण खेलों के साथ शुरू होती हैं, फिर पूरी कक्षा और छोटे

समूहों के लिए जोर से पढ़ने (रीड अलॉउडस) के साथ आगे बढ़ती हैं, जहां बच्चे एक-दूसरे के सामने भी पढ़ते हैं। उसके बाद पुस्तक चर्चा, पुस्तक वार्ता और कला, शिल्प, रोल प्ले और कई प्रकार के संलग्नता के माध्यम से किताबों पर चर्चा होती है। प्रेरणा की मुख्य चुनौती बड़ी संख्या में बच्चों से निपटना है- सभी बच्चों को व्यस्त रखना और व्यक्तिगत ध्यान देना, साथ ही बच्चों को स्वतंत्र रूप से जुड़ने के लिए स्थान और समय प्रदान करना। वह सकारात्मक व्यवहारों के लिए समझौते स्थापित करने पर भरोसा करती है। साधारण समझौते, जैसे जब कोई साथी पढ़ रहा हो तो ध्यान देना या किताब चुनने के लिए अपनी बारी का इंतजार करना okउन बच्चों के सहयोग से किए जाते हैं जो यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते हैं कि कक्षा पुस्तकालय सभी को लाभान्वित करता है।

यात्रा: द ब्लू लैडर ट्रस्ट, गुवाहाटी में एक सामुदायिक पुस्तकालय भी चलाता है, जो वयस्कों सहित, स्कूलों और स्थानीय समुदाय दोनों की सेवा करता है। स्कूल प्रोग्राम सामुदायिक पुस्तकालय के लिए एक आउटरीच कार्यक्रम के रूप में शुरू हुआ। प्रेरणा ने नेचर वॉक और प्रकृति को करीब से देखने जैसी गतिविधियां को शामिल किया है। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि उनका पुस्तक संग्रह समुदाय की जरूरतों को दर्शाता है। उसने देखा है कि अंतर्मुखी बच्चे अब किताबों के बारे में सजीव चर्चाओं में व्यस्त रहते हैं और आत्मविश्वास से अपनी राय व्यक्त करते हैं।

नेटवर्क शक्ति: प्रेरणा एफएलएन द्वारा पीअर लर्निंग, पुस्तकों और कार्यशालाओं के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले समर्थन के लिए आभारी है और महसूस करती है कि पुस्तकालयों को समर्थन देने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्हें लगता है कि FLN, एक मॉडल लाइब्रेरी के लिए एक विजन प्रदान करके महत्वपूर्ण प्रभाव पैदा कर सकता है। लाइब्रेरियन के लिए संसाधन बनाकर, सलाह प्रदान करके, इसमें दूसरों को लाइब्रेरी बनाने के लिए प्रेरित करने की क्षमता है।

वर्तमान में स्कूल पार्टनरशिप के माध्यम से द ब्लू लैडर ट्रस्ट लगभग **300** बच्चों को सेवा प्रदान करता है। सामुदायिक पुस्तकालय में प्रतिदिन लगभग **10-15** आगंतुक आते हैं।

द ब्लू लैडर ट्रस्ट | **इंस्टाग्राम**: @_theblueladder **फेसबुक**: @theblueladder **ईमेल**: theblueladder.pa@gmail.com **फोन**: 9435775000

उर्वशी उपाध्याय से बातचीत |उर्वशी एक प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्य हैं, जो कि **पी.एस. पचोखरा 2, टुंडला**, फिरोजाबाद में स्थित है, वे इस बात को लेकर उत्सुक थीं कि स्कूल में एक सक्रिय और कुशल पुस्तकालय बनाना है जो कि बच्चों और स्थानीय समुदाय दोनों की सेवा करे। यूपी में शिक्षा विभाग, स्कूल पुस्तकालय को अनिवार्य करता है, फिर भी उर्वशी ने जिले में अच्छी किताबों तक पहुंच की कमी के कारण अधिक दबाव डालने की आवश्यकता महसूस की। उनके यहाँ कुछ किताबों की दुकानें और पुस्तक विक्रेता हैं परन्तु कोई सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं है।

स्कूल की लाइब्रेरी: उर्वशी का मानना है कि स्कूल की लाइब्रेरी एक खुशहाल जगह होनी चाहिए। एक ऐसी जगह जहां बच्चे समय बिताएंगे, रुकेंगे और बात करेंगे। उन्होंने पुस्तकालय को उज्ज्वल और रंगीन स्थान बनाने पर ध्यान केंद्रित किया है। बच्चे प्रतिदिन दोपहर के भोजन के बाद पुस्तकालय जाते हैं और अपने लिए किताबें जारी करते हैं। इसके अलावा प्रत्येक ग्रेड को सप्ताह में एक या दो बार 40 मिनट आवंटित किया जाता है, जहां वे जोर से पढ़ने जैसी गतिविधियों में संलग्न होते हैं। शिक्षक बच्चों के लिए व्यक्तिगत रूप से पढ़ते हैं, बच्चों को बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की प्रस्तुति करते हैं।यहाँ पर किताबें ज्यादातर हिंदी और उर्दू में हैं।

उर्वशी की यात्रा: उर्वशी ने 2018 में प्रिंसिपल के रूप में अपनी भूमिका ग्रहण की। जबकि वहां इससे पहले एक पुस्तकालय था, वहां किताबें कम थी और वह छोटा था । उर्वशी ने कहा कि यूपी सरकार द्वारा कायाकल्प योजना शुरू करने से उनके स्कूल और कई स्थानीय स्कूलों को बुनियादी ढांचे के विकास के लिए बजट प्राप्त करने में मदद मिली है। इससे उन्हें अपने पुस्तकालय को एक नया रूप देने और इसे एक उज्ज्वल, रंगीन और स्वागत करने वाला स्थान बनाने में मदद मिली। उर्वशी ने समुदाय से समर्थन प्राप्त किया- और उन्हें "प्रेरणा साथी" नाम दिया। इसमें स्कूल के पूर्व छात्र, नामांकित बच्चों के माता-पिता और समुदाय के अन्य समर्थक शामिल हैं। लॉकडाउन के दौरान इस समूह ने और समुदाय के अन्य समर्थक शामिल हैं।

लॉकडाउन के दौरान इस समूह ने बच्चों के लिए घर पर ही किताबें बांटने की व्यवस्था की, ताकि वे स्कूल या लाइब्रेरी से कटे न रहें. उर्वशी ने पुस्तकालय में पुस्तकों के एक बड़े संग्रह और बच्चों के लिए रुचिकर और उनसे संबंधित कहानियों को रखने पर भी ध्यान केंद्रित किया है। वह पुस्तकालय के लिए किताबें खरीदने के लिए आगरा और आसपास के अन्य बड़े शहरों का दौरा करती रहती हैं।

नेटवर्क शक्ति: उर्वशी एफ. एल. एन में शामिल हुई ताकि वह पुस्तकालय प्रथाओं पर, पुस्तकों को कैसे प्राप्त करें, पुस्तकों के साथ जुड़ाव को गहरा करने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी पर अद्यतन रह सके। उन्हें लगता है कि नेटवर्क का हिस्सा होने से उन्हें और उनके शिक्षकों को लाइब्रेरियनशिप के कई पहलुओं का पता चलता है। उन्हें लगता है कि एक कलेक्टिव के रूप में, एफ. एल. एन को संसाधनों, प्रशिक्षण और किताबों की क्यूरेशन और खरीद पर जानकारी का एक आम पूल बनाना चाहिए।

उर्वशी को लगता है कि सरकारी योजनाओं की शुरूआत के साथ, विशेष रूप से वे जो स्थानीय स्वयं सहायता सरकारों को सशक्त बनाती हैं, सार्वजनिक स्थानों जैसे पुस्तकालयों और यहां तक कि अन्य सार्वजनिक सुविधाओं- जैसे स्कूलों और अस्पतालों को विकसित करने और बनाए रखने में स्वामित्व की भावना अधिक हुई है।

पीएस पचोखरा 2 स्कूल | | पता: Srinagar Pachokhra Tundla Firozabad **ईमेल**: urvashi.agra@gmail.in

देवाशीष से बातचीत | कथा कनन (सतीर्थ की पहल) नागांव, असम में दो सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के साथ काम करता है- एक हिंदी माध्यम और दूसरा असमिया। देबाशीष का मानना है कि हर स्कूल या शैक्षणिक संस्थान में एक पुस्तकालय कार्यक्रम होना चाहिए जो बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने का अवसर देता है और आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है। इसे एक समावेशी स्थान के रूप में भी काम करना चाहिए जो हमारे समाज में देखी जाने वाली विविधता को दर्शाता है।

द क्लासरूम लाइब्रेरी: अभी देवाशीष ने एक स्कूल में ग्रेड 1-4 के लिए एक सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किया है। दूसरे स्कूल में उन्होंने कक्षा के भीतर रीडिंग कॉर्नर स्थापित किए हैं। स्कूल छोटे हैं और जगह का रचनात्मक उपयोग कैसे करें, इस चुनौती के कारण एक स्कूल ने देवाशीष से राय मांगी।स्कूल भी निरंतर जुड़ाव के लिए उत्सुक हैं और उच्च गुणवत्ता वाले बाल साहित्य लाने के लिए कथा कनन की क्षमता को महत्व देते हैं। कथा कनन ऐसी किताबों को क्यूरेट करता है जो कि बच्चों की रुचियों, जरूरतों और क्षमताओं को दर्शाती हैं। अभी स्कूल पुस्तकालयों के साथ देवाशीष की चुनौती किताबों के साथ निरंतर जुड़ाव बनाए रखना है, जो कि वे अपने सामुदायिक पुस्तकालय में दैनिक जुड़ाव के कारण आसानी से कर लेते हैं। स्कूल के पुस्तकालयों में कम संपर्क और बड़े बैच होते हैं। वे सभी बच्चों को जोड़े रखने के लिए ऊर्जा देने वाले गाने और एक्शन गानों पर भरोसा करते हैं, और पढ़ने के साथ जुड़ाव को और गहरा करने के लिए अन्य तरीकों पर काम कर रहे हैं।

देबाशीष की यात्रा: सतीर्थ एक सामुदायिक पुस्तकालय भी चलाती हैं जो लगभग 100 बच्चों को सेवा प्रदान करती है। देबाशीष के लिए, एक विशेष क्षण वह था जब पुस्तकालय के सदस्यों में से एक, जो किताबें पढ़ने में भी हिचकिचाता था, ने किताबों की समीक्षा लिखना शुरू कर दिया। उन्हें याद है कि बड़ा मोड़ तब आया जब उस बच्चे ने "मेरा नाम गुलाब है" नाम की किताब उठायी - और तुरंत जाति आधारित भेदभाव से जुड़े अन्याय के संबंधित विषय को समझा, और तब से वह एक उत्साही पाठक बन गया और खुद को अभिव्यक्त भी करता है।

नेटवर्क शक्ति: देवाशीष की सबसे बड़ी चुनौती उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकों की उपलब्धता है। एक मुद्दा किताबों की दुकानों की कमी है। दूसरी समस्या असमिया या हिंदी में प्रकाशित अच्छी सामग्री की कमी है। वह एनबीटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर भरोसा करते हैं, लेकिन उनका मानना है कि यह वह जगह है जहां एफ. एल. एन कलेक्टिव, प्रकाशकों के साथ मिलकर, स्थानीय भाषाओं में अधिक सामग्री की वकालत करके, उन तमाम पाठकों का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जिनके पास पढ़ने को अपनी कहानियां नहीं हैं।

वर्तमान में स्कूल के कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग **150** बच्चों को सेवा प्रदान की जाती है और सामुदायिक पुस्तकालय में एक दिन में करीब **30** आगंतुक आते हैं

कथा कानन और सतीर्थ | फेसबुक:: @satirthainfo **इंस्टाग्राम**: @satirthaofficial **ईमेल**: debasish.bunyan135@gmail.com: **फोन** 7002245376

प्रीति से बातचीत | शेयर ए बुक इंडिया (सबिया) शेयर ए बुक इंडिया (SABIA), स्कूलों में अध्ययन और पठन (मनोरंजन के लिए!) शुरू करने के लिए एक अभियान के रूप में शुरू हुआ। यह अब राजस्थान में एक पंजीकृत ट्रस्ट है, और 16 राज्यों में 175 स्कूलों के साथ काम कर रहा है। लॉकडाउन के कारण कई साझेदारियां बंद हो गईं थी, परन्तु अब SABIA की गतिविधियां राजस्थान, दिल्ली, कश्मीर और महाराष्ट्र में प्रभावी हैं। उन्होंने 30,000 से अधिक बच्चों को प्रभावित किया है।

द क्लासरूम लाइब्रेरी:

SABIA ने शिक्षा विभाग/निदेशालय से एक परिचय या संस्तुति के साथ स्कूलों के साथ जुड़ाव शुरू किया। SABIA को विशिष्ट पुस्तकालय अवधि आवंटित की जाती है जिसमें स्वयंसेवक 'रीड अलाउड' करते हैं और न केवल अध्ययन पर बल्कि सामाजिक-आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, छात्रों को खुद को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और तो और विशिष्ट विषयों, मूल्यों के बारे में चर्चा भी करते हैं।SABIA टीम स्कूलों में एक भौतिक पुस्तकालय स्थान बनाने पर भी काम करती है। इस भौतिक पुस्तकालय का निर्माण वॉर्म रीडिंग कॉर्नर बनाकर, पुस्तक संग्रह उपलब्ध कराकर और निर्मित करके होता हैं। प्रीति का मानना है कि पुस्तकालय एक रंगीन, हार्दिक और आमंत्रित करने वाला स्थान होना चाहिए।

सबिया की यात्रा: सबिया की शुरुआत एक विचार से 2017 में हुई, जब प्रीति और सृष्टि, दो दोस्त, आर टी ई (शिक्षा का अधिकार) के कार्यान्वयन को समझने के लिए स्कूलों से बात कर रहे थे। उस यात्रा ने उनको स्कूल में पढ़ाने के लिए और लाइब्रेरीज खोलने के लिए प्रोत्साहित किया और उत्साह दिया। उन्होंने साझेदारी को स्थापित करने के लिए सब से पहले प्रधानाध्यापकों और विद्यालय प्रमुखों के पास जाना शुरू किया। उनका यह मानना है कि, खुले दरवाज़े होने के आसार बढ़ जाते है अगर

शिक्षा विभाग में कोई सहयोगी होता है तो। **2020** में उन्होंने औपचारिक रूप से एक ट्रस्ट के रूप में पंजीकरण कराया। सबिया ने सार्थक साझेदारी और सहयोगियों के साथ-साथ स्वयंसेवकों और पुस्तकों को स्रोत बनाने के लिए सोशल मीडिया का सबसे व्यापक रूप से उपयोग किया है। उनका एक भव्य मिशन था, - **"मिशन 100"** जिसका उद्देश्य था - सौ स्कूलों के साथ भागीदारी। यहां भी उन्होंने सोशल मीडिया पर अपना विजन रखा और विभिन्न स्कूल प्रमुखों, प्रिंसिपलों, और अन्य संगठनों, जैसे टीच फॉर इण्डिया, वरित्रा फाउंडेशन आदि के साथ संबंध बनाए। सृष्टि ने कहा कि उनकी प्राथमिकता ग्रामीण क्षेत्रों या दूर-दराज के उन स्कूलों के साथ काम करना है जहां किताबो /पढ़ने के संसाधनो/जानकारी तक पहुंच की भारी कमी है।

नेटवर्क शक्ति: प्रीति का मानना है कि पक्षपोषण एफ. एल. एन की भूमिका महत्वपूर्ण है; और आवश्यक है कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को सामने लाने के लिए, ऐसे सवाल पूछना जैसे की - पुस्तकें पढ़ना सभी के लिए सुलभ क्यों नहीं है, सार्वजनिक पुस्तकालयों की मांग, और यह महत्वपूर्ण है कि हम पुस्तकालयों की वास्तविक क्षमता और लोकतंत्र में इसकी भूमिका के विषय में बात करें, उपदेश दे, इस पर लेखन और प्रतिरूपण हो।

Share a Book India Association (SABIA)| Website: https://www.shareabookindia.org Facebook:@Share A Book India Association Instagram: @shareabookindia Email: shareabook.in@gmail.com Phone: +91 9654322891, +91 9116899611

किताब - कोना

FLN किताबों के सुझाव

Books from Chetna Trust - order here

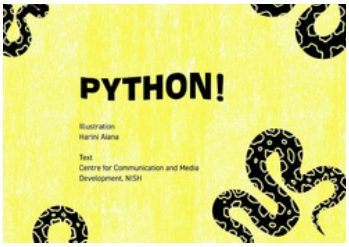

पाईथोन! चित्रकार: हरिनी आइना प्रकाशक: नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हियरिंग [एन.आई.एस.एच.]

रामू की छुट्टियाँ घर में अजगर मिलने से शुरू हुई! हर कोई उसे एक सुराग देता है, लेकिन कुछ भी उसे तैयार नहीं करता कि वह क्या देखेगा! जीवंत चित्रों, सरल पाठ और सामान्य संकेतों के समावेश के साथ, यह पुस्तक श्रवण बाधित (बहरे) लोगों की जरूरतों का प्रतिनिधित्व करती है, लेकिन सभी बच्चों और बड़ों के लिए मजेदार है!

ए गेमऑफ स्टिक्स, प्रकाशक: चेतना चैरिटेबल ट्रस्ट

माया को एक नया खेल मिलता है जब हवा के झोंके से उसकी छड़ियाँ उड़ जाती है। प्रत्येक पृष्ठ में छड़ियों को महसूस करने और उन्हें खोजने में उसके साथ जुड़े। यह एक 'स्पर्श छूँकर पढ़ना' (Touch to Read) पुस्तक है जिसकी अदृश्य बनावट द्वारा उन बच्चों की मदद होगी जिन्हें ध्यान देने में कठिनाई (attention difficulties) होती है या जो दृष्टि हानि होते हैं। (अनुरोध पर आप मुख्य लोगों और वस्तुओं का परिचय देते हुए स्पर्शनीय कार्ड (tactile cards) भी प्राप्त कर सकते हैं)।

ब्लू लैडर ट्रस्ट का पसंद

इस्मत की ईद, लेखन: फ़ौज़िया गिलानी विलम्स; चित्रण : प्रोती रॉय; प्रकाशक: तूलिका बुक्स

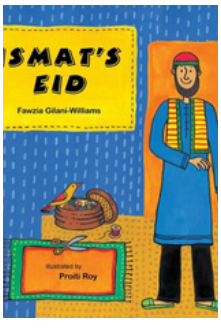

अधिकांश एफ.एल.एन पुस्तकालयों के साथ पसंदीदा- क्या होता है जब इस्मत ईद के लिए खरीदारी करते समय बहुत लंबी पतलून खरीदता है? एक तुर्की कहानी का स्पष्ट रूपांतर, जिसे प्यार से बताया और चित्रित किया गया है

गजपति कुलपति, लेखन और चित्रण: अशोक राजगोपालन

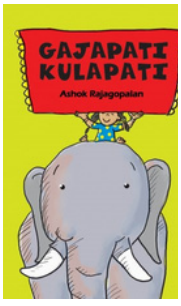

हर कोई इस सौम्य और मिलनसार हाथी को प्यार करता है। उसके विभिन्न कारनामों में से चुन कर पढ़ें - आच्चू - गजपति का जुकाम, कालबलूश - तालाब में उसकी डुबकी या उसका गुरबोरोम पेट। यह श्रृंखला लगभग सभी बच्चों द्वारा अपने मज़ेदार शब्दों (ब्लिश ब्लोश ग्लिश ग्लोश!) और चमकदार चित्रों की वजह से पसंद की जाती है।

प्राथमिक विद्यालय पचोकरा का पसंद

चाय, एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित

मदन अपने मित्र जमाल के लिए एक कप चाय बनाता है। क्या जमाल को चाय पसंद आएगी? यह जानने के लिए हिंदी में छोटे-छोटे वाक्यों वाली इस चमकदार चित्रों वाली पुस्तक को पढ़ें |

नानी का चश्मा एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित

छोटे-छोटे वाक्य और चमकीली तस्वीरों वाली राम की कहानी जो हर जगह अपने नानी के चश्मे को ढूंढ़ता है। शुरुआती पाठकों के लिए एक बेहतरीन किताब।

कथा कानन और साबिया का पसंद

लाल बरसाती, लेखक: किरण कस्तूरिया, चित्रकार: ज़ैनब तम्बावाला. प्रकाशक: प्रथम बुक्स

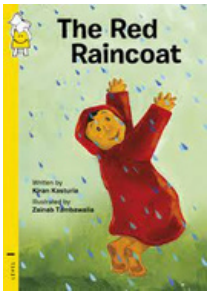

मनु के पास एक नया रेनकोट है। पर बारिश उसे इंतज़ार और इंतज़ार और इंतज़ार करवाती है

खिचड़ी- एक लोक कथा लेखक (दोहरान): जितेंद्र कुमार दुचि, चित्रकार: दुर्गाबाई व्याम, प्रकाशक : एकलव्य

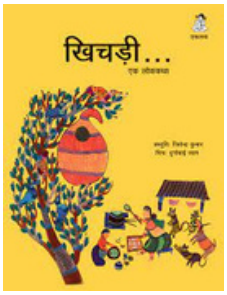

पढ़िए बिरजू की यह लोककथा और खिचड़ी से उनका प्यार। कहानी और रूप के लिए एक महान कक्षा जोर से पढ़कर सुनाने वाला संसाधन।

नानी चली तहलने, लेखक और चित्रकार: दीपा बलसावर, प्रकाशक: प्रथम बुक्स

अपनी नानी के साथ टहलने के लिए वेंकी के साथ जुड़ें और इसे एक साहसिक कार्य में बदलते हुए देखें!

Translation Credits: Dr Amit Yadav, Vani Garg, Prachi Grover. Prerna and Debasish
Write to madhumita.rajan@gmail.com with feedback, queries and requests to feature your library or work